मुन्नाजी

तीनटा बाल नाटक

(परी नगर, गाछ बचाउ आ बैजू बावरा)

परी नगर

पात्र-परिचय

चंपक	:-	राजकुमारी
परीरानी	:-	परी नगरक प्रधान
दरबान	:-	चौकीदार
मालिक/मलिकाइन	:-	एक टा हवेलीक मालिक मलिकाइन।
जय विजय अजय संजय		चारो राजकुमार दोस
रामरमल	:-	सेठजी
धनवंती	:-	सेठियाइन
इमरान	:-	गैराजमालिक (ओस्ताद)
महमूद	:-	गैराजक कर्मचारी
राम ठाकुर	:-	काठक वौस्त के कलाकार

दृशय-पहिल

स्थान :- परी नगर, रंग विरंगक परी चारू भर उपस्थित ऐछ। गाना बाजाना चलि रहलऐछ। चंपक संग सब सहेली गीत गबैए।

चंपक :- सुनु कहानी परी के नानी हम सब धुन के पक्का छी। उत्तर नाची दक्षिण नाची नाची सगरो नगरी में पुरूब पछिम चलैए हमरे पानि भरि ली गगरी में हवा चलैए मेघ लगैए परी सब अप्पन धुन में गबैए हम गाओल सुर नै ताल लगाबी रंग विरंग के नाच देखाबी छीया पुता देखि देखि के हमरे नकल करैए आनी मानी परी के नानी हम नै कोनो दोष जानी हम परी लोक में आनंद उठावी घरती के

नै अप्पन मानी।

सब मिलि जुलि मगन भ' जाउ

सब मिलि दुशमन के नाच नचाउ

सुनु परी के नानी चाही हमरा राजकुमार

हम ताकि रहल सब कुमारी रानी छी।

परी लोक में नाच गानक मध्य चारिगोट राजकुमार आवि नाचय लगैए।

परी रानी :- खबरदार। परी नगर में हमर आदेश बिनु पुरूषक प्रवेश कोना भेल? (नाच-गान रूकि जाइए, सभाटा...........) दरबानजी ओइ चारू लोक के पकैड़ दरबार हाजिर कएल जए।

दरबान :- जी परी रानी जे आज्ञा हो! दरबान चारो नवागंतुक के पकड़ि दखार में उपस्थित करँए।

परीरानी :- अहाँ सब के छी, कत' सँ आ किएक एलौं हैं? (सबचुप्प!) बाजू चुप्प किएक छी?

जय :- परी रानी क्षमा कएल जए। हम जय, अजय, विजय आ संजय चारू गोटे चारि दिशाक राजघरानाक राज कुमार छी। हम सब शिक्षा ग्रहणक पछति देश भ्रमण पर निकलल छी एत आयोजित मनोरंजनक कार्यक्रम देखि दरबार में प्रवेश क' गेलौं। आव जे दण्ड देल जए।

परी रानी :- हम सब अपन नगर में बैशाखक पुर्णिमाक राति परी राजकुमारी सब द्वारा रंग-विरंगक नृत्यक प्रस्तुती करबै छी। जे सम्मोहन कहबैछ। एहि अवसर पर राजकुमारी अपन छैव छटा सँ राजकुमार के रिझेवाक लेल विभिन्न प्रकारक स्वांग सेहो रचै हथि। ऐ अवसर पर राजकुमार क समक्ष शर्त्त राखल जाइछ। जे राजकुमार ऐ शर्त्त के पुर क' दै हथि से राजकुमारि के अंगिया लेबाक अधिकारी होइत छथि।

विजय :- हे परी रानी हम सब त' देश भ्रमणक मध्य एत' आवि टिकलौं। हमर सबहक किआहक सोचक कोनो निर्णये नै ऐछ। ताहू में माता-पिताक आज्ञाक बिना।

परी रानी :- अहाँ चारू राजकुमार हमर आज्ञाक बिना ऐ रंगमहल मे प्रवेश केलौं। तकर सजा त' भुगतइये पड़त। आओर' तकर सजा ऐछ चारू राजकुमार चारि अलग दिशा में जा अपन श्रम सँ राजकुमारी के लेल कोनो उपहार योग्य वौस्त आनि पुनः अगिला पुर्णिमा के उपस्थित होय।

दृश्य-दोसर

जय, अजय, विजय आ संजय चारो राजकुमार बैसि सोच में डूमल।

जय :- कहू, हम सब निकलल रही देश भ्रमण में। जे देश भरि में घुमि फिरि सब रंगक कलो, संस्कृति एवं विभिन्न समाजक रहन-सहन के जानव। ओइ क्रम में किछु सीखबाक अवसर भेटत। मुदा एत आवित' फँसि गेलौं परीक फाँस में।

विजय :- यौ किए ने हम सब अप्पन-अप्पन देश के घुइर जाइ।

जय :- नै यौ। ई राजकुमारक शान के बट्टा लगाओत।

अजय :- यौ, ऐ मे हरजे की छै। हम सब युवा छीहे पढ़ि लिखि लेवे केलौं। अही बहन्ने सबहक विआहो भ' जएत।

जय :- सबहक नै। एके टा काबिल के चुनल जएत। बाँकी सब रहब कुमारे (सब हँसैए)

संजय :- अहाँ सब मरद नै छी। जँ सच्चे मे मरद छी त' फेर विलमल किएक छी। हमरा त' मोन होइए जे एखने ज' विआह भ' जाइत..........।

जय :- ठीके बात छै। समय गमा के किछु नै हएत। सब अप्पन-अप्पन देशक उनटा दिशा में निकलि लागि जाउ उपहार अनवाक प्रयास मे। हम जाइ छी उत्तर में विजय-दक्षिण अजय-पुरब आ संजय पछिम भर में निकलू। सबहक निर्धारित दिशा में प्रस्थान होइए।

अम्हार पसरि जाइए

दृश्य-तेसर

विजय अपन निर्धारित दिशा में विदा भेल रस्ता में सोचैत जाइए...........। हम राजकुमारी के सुन्दर साड़ी भेट करब......। नै.........नै जेबर सँ प्रसन्न भ' जेती। मुदा साड़ी की जेवर आनव कत' से? चलैत-चलैत शहरके एक टा दोकान पर पहुँचल।

विजय :- सेठ जी, हम पढ़ल लिखल छी, मुदा बेरोजगार छी। कृपा क' हमरा अपन दोकान में नोकरी राखि लियय।

सेठजी :- अहाँ हमरा लेल अपरिचित छी, हम कोनो अनजान लोक के एतेक पैछ दोकान में नोकरी कोना द' सकैछी। नै, किन्नौ नै हम अहाँ के नोकरी पर नै राखब।

विजय :- मालिक, हम बड्ड गरीब छी, मुदा पढ़ल लिखल बेरोजगार छी। अहाँ ज' कोनो नोकरी द'; दैतौ त' बड्ड उपकार मानितौ।

मालिक :- अहाँ के छी, कत से एलौं ऐछ? विजय अपन मिथ्या परिचय प्रस्तुत करैछ.........। ठीक छै, आइ सँ एत' दरबानक काज करू। खेनाई पिनाई समेत पाई सेहो भेटत। विजय काज करैत रहल आइ सातम दिन-खाइ लेल कोठरी में पहुँचला घर में रूकि चारू भर देखइए......... कि मलकीनिक नजरि पड़ैए........।

विजय :- चौंकति ऍं. मालकिन! जी,जी हम खा लेलौं घरक सजावट बड़ नीक लागल से देख' लगलौं।

मालकिन :- ठीक छै, आब दरबज्जा पर चलि जाउ।

मालिक :- हँ, मालिक, खेनाइ त' खा लेलियै। कने ओसारा पर विलमि गेल रहियै।

मालकिन :- (हँसैत)..... अहाँ पर नजरि गरा देलक की?

मालकिन :- (तुरूच्छ भ') अहूँ के ऐ उमेर में चौल सुझाइए।यौ, ओ खेलक त' ओसारा पर मुदा कोठरी में घुसि चारूभर निहौर छल।

मालिक :- विजय आंगन जा खा आउ। हे आइ आंगन में हमकब जल्दीये घुरि दलान पर आबि जएब।

दोसर दिन विजय आंगन सँ खा दलान पर त' अबैए मुदा मालिक के अढ़ पबिते परा जाइए।

विजय :- रस्ता में असगेर चलैत- (हाथ में हार नेने) परी रानी त' प्रसन्न भ' जेती। आ चंपक हमर रानी भ' जेती.........। प्रसन्न होइत डेगा डेगी बढ़ल जाइत।

<u>अन्हार पसरैए।</u>

दृश्य-चारिम

मोटर गैराजक दृश्य। ओस्ताद लूंगी गंजी पहिरने कुर्सी पर बैसल।

संजय :- ओस्ताद जी, अहाँक गैरेज में प्रतिदिन कतेक गाड़ी भंगठी लेल अबैत हएत?

ओस्ताद :- इएह बारह-पन्दरह।?

संजय :- अहाँ लग कतेक सहयोगी वा मिस्त्री काज करैए गैराज में?

ओस्ताद :- यौ, अहाँ चोर चुहार छी, कि आयकर अधिकारी छी। प्रश्नक झड़ी लगा देलौ। पहिने अहाँ अपन परिचय त' दियय?

संजय :- हम......... (अपन मिथ्या परिचय दैत) नोकरी कर' चाहै छी।

ओस्ताद :- यौ, अहाँ गोरनार हट्ठा कट्ठा शरीर आ पढ़ल लिरकल। ऐ ठाम..... कोनो नोकरी नै ऐछ।

संजय :- नै ओस्तादजी से नै सोचियौ। अहाँ जे काज देब हम सब काज क' सकैछी।

ओस्ताद :- ठीक छै, देखै छी। अहाँ अपन राजकुमार बला पोशाक उतारू। लियय-लूंगी गंजी पहिर उतरू मैदान में। पकड़ू ई वाइपर आ डस्टर अहाँ के गाड़ीक सफाई बला काज दै छी।

संजय :- (मोने मोन प्रसन्न होइत सोचैए) भाइतों राखि त' लए। तखन देखिद जे हम कोने काज वास्ते एत' एलौ अछि।

ओस्ताद :- भाई जान ....आवत एत काज करैत दस बारह दिन भ गेल। मोन लगैए की नै

संजय :- (मोनेमोन सोचेत मोन त तखन लागत जखन गाड़ीक चाभी हाथ मे आओत।)
ह ओस्ताद जी खुब मोन लगैए।

ओस्ताद :- अहॉ त एत पाइलेल काज धेलौ ऐछ। मुदा पाइक मादे त आइ धरि पुछबेनैकेलौ

संजय :- ओस्ताद जी पेट भरि खेनाई दुनू साझ भेटिये जाइए। रहे लेल घर अइछे तहन चिन्ता कोन अहॉ जे देबे सएह स्वीकार्य।

ओस्ताद :- भाई जान गाड़ी चलब अबैए?

संजय :- जी ओस्ताद जी छोटका-बड़का, देसी विदेसी सब गाड़ी चलबै ही।

ओस्ताद :- वाह बहुत सुन्दर। चाभी हाथ मे देत आंगूर स विश्वसनीय इसारा करैत हे ओ बी0 एम0 डब्ल्यू कार छ। विदेशी कार अछि। हमर सब सॅ विश्वसनीय आ पाइ बला गॉहिकक गाड़ी अछि। कने बचबैत सुरक्षित ओकरा घर पहुचा दियौ।

संजय :- ह,ह किएक नै ओस्ताद। जे आदेश दी हम पुरा करब। कतौ बाट मे किछु नै हेतै से बिश्वास दियबै ही।

ओस्ताद :- महमूद रौ, संजय के नै देखै हियै। मील बला सेठ जी ओत गाड़ी ल के पठेने रहियै। ओ तीस हजार टाका देने हेतै। महाजन के आइये बजेने हियै।

महमूद :- ओस्ताद भाईजान जे गाड़ी लके परसु गेल से घुइर के आयल कहा। ओ त नै काल्हि आयल आ ने आइये आयल अहि एखन घरि। है, एक टा गप्प त बिसरिये गेल रहि।

ओस्ताद :- चौकंति कथि रौ। कहने।

महमूद :- काल्हि मीलबला सेठ जी के डेरवर आयल रहए। जे सेठ जी गाड़ी मगलखिन हे हुनका आइ कतौ बाहर जेबाक छन्हि।

ओस्ताद :- आय आव की हेतौ रौ। हे अल्लाह ....।

<u>अन्हार पसरैए</u>

दृश्य-पॉचम

जय घुमैत टहलैत चाननक वोन मे पहुचैए। ओत बरही सब काज करैत रहैए। ओ ओकरा सँ गोहारी करैए चाननक लकड़ी के आसन बनएब सीखा देबाक लेल।

राम ठाकुर:- बौआ अहॉत पढ़ल गुणल नीक कुशलशीलक लोक लगै छी। इ कठीन काज है। तहन कहु जे अहा कोना क सकब ई काज?

जय :- नै कक्काजी अहा धखाउ जुनि। हम अहा सेग जेना कही जते कही मेहनत करबाक लेल तैयार छी।

राम ठाकुर:- रूखान टेढ़ ऐछ..........सोझ करू। ह ठीक एछ बैसला उनटा चोट दियो। हे.... हे...... बैसला उछलत। ठीक स पकरू औगताउ नै।

जय :- कक्काजी देखियौ त तरासल भेलै। मेहनत बड़ लगैए मुदा हम काज पुरा भेलाक बादे छोड़ब।

राम ठाकुर:- जय हम अहाक मेहनत लगन आ काज के पन्द्रह दिन स परेख रहल छी। आजुक धिया पुता मे सीखवाक लेल एहेन उत्सुकता कहा देखाइए। मुदा लगैए जे अहा राज सिंहासन बनाइए के छोड़ब।

जय :- कक्का ई पौआ छोट पैघ है की? एक रंग नै बैसल। कने अहा भजारि के देखतीयै।

राम ठाकुर:- बौआ हसैत पौआ छोट पैघ नै छै। एतुक्का माटि उच निच है ते पौआ नै बैसल ऐछ। सिंहासन के समतल माटि पर बैसा के देखियौ।

जय :- पसेना स तर बतर कॉटी ठोकैत मोन नै पड़ैए जे अपन जिनगी मे कहियो एतेक मेहनत केने होई। मुदा बैसल ठाम खेनाइ कपड़ा लता आ फुटानी कतेक दिन। कतेक दिन जियव दोसरे भरोसे पर। अपनो भविष्यक लेल त किछु करैये पड़त।

राम ठाकुर:- बौआ अहाक बनाओल सिंहासन कीनवा लेल त लोकक पौति लागि गेल। कतेक दाम लगैबे एकर। एक त चानन तैपर मास भरिक मेहनत। की दाम कहि लोक के परख।

जय :- कक्का, सत्य कहू जे ई सिंहासन केहेन बनलैए?

राम ठाकुर:- बौआ हदय स कहै छी जे आइ घरि नव पुरान कियो बरही एहेन राज सिंहासन नै बनौने छल। जेहेन अहा पहिल प्रयास मे बना लेलौ। अहा एकर जतेक दाम

कहबै। मुह मांगल दाम देबा लेल चारू भरक राज दरबारक दरबारी सब तैयार अछि। अहा मुँह त खेलू।

जय :- कक्का.............।

राम ठाकुरः- हॅ,हॅ बौआ, अहाँ बाजू त की लेब एकर दाम?

जय :- कक्का एकर कोनो टा दाम नै चाही हमरा।

राम ठाकुरः- ऐ,त एतके दिन में परिश्रम मंगनी मे विलहब एकरा?

जय :- हे कक्का मेहनत क हम अपन भविष्यक बाट बनेलहु ऐछ।

राम ठाकुरः- आ ई सिंहासन?

जय :- ई वौस्त बनेलहु परी नगरक राजकुमारी चंपक के भेंट देबाक वास्ते जाहि स प्रसन्न भ परीक रानी हमरा चंपक के हाथ धरा दैथ आ हमर जीवन पुर्ण भ जए।

राम ठाकुरः- जाउ बौआ........ अहा जिनगी मे सदिखन सफल हएव। ई सिंहासन अहा के सुखी सुखी आ नवजीवन दिए।

<u>अन्हार पसरैए</u>

दश्य छठम

फुलवारी का दश्य। ओत एकटा बेंच पर अजय बताह नहाती बड़बड़ाइत सूतला। विआह.......... विआह............ विआह। कहु त हम राजकुमार शनो शौकत बला लोक से दर दर भटकू। किएक त विआहक खातीर। नै किनहु नै

दरबानः- ऐ...... के ही बड़बड़ाइत। जा ऐ पार्क मे सॅ जुआरी सराबी के पार्क मे एनाइ वर्जित एछ। नै बुझल छह तोरा।

अजयः- दरबानक गिरेबान पकरैत एतो के छियै। तोहर ई मजाल राजकुमारक वेइजति करबे तो। के रखलको तोरा एत नौकरी पर बजा ओकरा। आइ ओकरो नै छोड़बो और तोरो नै।

दरबानः- मालिक गलती भ गेल। अहॉ के बताह नहाति बड़बड़ाइत सुनि हमरा लागल जे कियो जुआरी सराबी ही। मोहल्ला सम्य लोकक ह। ते हम मना केने रही।

अजयः- सोचैत........ कत जा कमाउ हम। कमाएव नै त परी के उपहार कोना देबै। उपहार नै देबै त बिआह कोना होएत? किछु क्षण विलामि विआह लेल नौकरी। नै किन्हु नै हमरा ज कियो नोकरी करैत देखलेत त हमर प्रतिष्ठा की हएत

ओमहर हमर बपौती संपति एतेक ऐछ जे जीवन भरि बिना किछु केने ऐयासी चलत फेर कोनो काज किएक?

दरबान:- मालिक अहाँ के कोनो काज-धाज नै ऐछ की? (व्यंग्यक लहजे) भरि दिन अहाँ के शहर मे बौआइत देखै छी नै पार्क मे आबि औझराइल

अजय:- रौ सुन दरबान हे दरबान जकॉ रह राजा बेटा जकॉ नै बुझलीही की नै।

दरबान:- जी मालीक अहॉ राजकुमार ही जे मरजी हुअए करू। हमर की जाइए।

अजय:- सुन हमरा बीस तीस गो गुलाबक फूल पार्क सॅ तोइर आनि दे।

दरबान:- मालिक ए पार्क मे फूल पात तोड़ब मनाही है हम ज तोड़ैत पकड़ा गेलौ त हमर नोकरियो छुटि जएत आ दण्ड सेहो भेटत।

अजय:- रौ त दरबान हे दरबान जकॉ रह। जे कहलियौ से करै हे की नै ?,

दरबान:- हॅ मालिक.....। हे लियय गुलाबक फूल गुलदस्ता आ जाउ एत से। हे भगवान जान छूटल।

<u>दश्य सातम</u>

पुरे एक मास बाद पुर्णिमा स एक दिन महिने बेरा बेरी चारो राजकुमार परी रानी के दरबार मे उपस्थित होइछ।

परी रानी:- स्वागत अहॉ सब गोटे के धन्यवाद। अहॉ सब गोटे नियत समय पर भेलहु। दरबान हिनका सबके अतिथिगह मे ल जा स्वागत कएल जए।

दरबान:- जी महारानी जी जे आज्ञा...........।

परी रानी चपक आ ओकर सहेली सब गोलमोल बैठकी लगेने बैसल चंपक खुब सजल धजल उज्जर वस्त्र मे।

परी रानी:- दरबान अतिथि राजकुमार सब मे सॅ बेरा बेरी उपस्थित कएल जाए।

दरबान:- जी महारानी जी ई हथि राजकुमार विजय।

विजय के हाथ मे हार ल उपस्थित होइते सभा मे आकाशवाणी भेल

चोरी क जे अनलनि माला

हुनका कोना पसिन करतनि बाला।

अटठास हा.......हा..........हाक स्वर।

ई वाक्य सुनिते विजय मुड़ी गेंति बैसि गेल।

दरबान:- रानी जी ई हथि दोसर राजकुमार संजय।

संजय अपन कार के बहुरिया जकाँ सजा आगू अनै हथि। मोनेमोन प्रसन्न जे ई उपहार देखि महारानी जी प्रसन्न भ जेती। आ चंपक भ जेति हमर रानी।

आकाशवाणी होइए।

ठकि के ज अनलक कार ओ ओ करत आब जेल विहार।

ईश्वर सुनिते संजय कारक भीतर जा नुका गेल।

दरबान:- रानी जी आब सभा मे उपस्थित भ रहल छथि राजकुमार अजय। अजय जे सबस निकम्मा छल। गुलाबक गुच्छा हाथ मे धेने प्रवेश करैए। आकाशवाणी होइए।

जे अछि निकम्मा सबसे वेशि

हे जकरा धन केर अहंकार

परी के हाथ धरएव हएत अत्याचार।

बेचारा अजय अपन चेहरा पायाक अढ़ मे नुका लैए। लाजे कतौ एम्हर ओम्हर नै जकैए।

दरबान:- महारानी आब चारिम आ अन्तिम राजकुमार जय उपस्थित होइत छति।जय शांतिपुर्ण दंगे अपन मेहनत सँ बनाओल सिंहासन ल आगां बढ़ैछ। संपुर्ण वातावरण मे चाननक सुगंध पसरि जाइछ।

चाननक सिंहासन देखि परी रानी राजकुमारी एवं सहेली सब खुशी सँ उठि ठाढ़ भ जाइछ।

आकाशवाणी होइछ।

जे श्रम सँ घुमल वन वन

स्वयं बना आनल सिंहासन

वर के रूप मे हुअए उएह चयन।

संपुर्ण दरबार थपड़ी सँ गुंजित भ उठैछ।

महारानीक आज्ञा सँ चंपक भाला लए जय के गरदनि मे पहिर प्रसन्न होइत छथि।

दरबार नत्य आ संगीत सँ गुंजयमान भ उठैछ।

दृश्य आठम

नव राजा जय आ रानी चंपक के संग परी रानी दरबार लगेलनि। दरबार मे तीनू अपराधी राजकुमार के उपस्थित करबाक आज्ञा देल गेल।

मंत्री:- अहाॅ तीनू राजकुमार पर अपराधीक आरोप लागल एछ। अहाॅ तीनू गोरे के अपन सफाइ मे किछू कहबाक ऐछ?

तीनू राजकुमार उठी ठाढ़ भ।

महारानीजी हम सब अप्पन अप्पन कएल कुकर्म पर लज्जित ही। आगू फेर एकरा नै दोहराएब से सप्पत खाई ही। अहाॅ जे चाही हमरा सब के दण्ड सुनाउ।

महारानी:- अहाॅ सब अपराधी छी अहाॅ सब दण्डित कएल जएब। अहाॅ सबहक दण्डक निर्धारण नव चयनित राजा महाराज जय करताह।

जय:- अहाॅ सब हमर मित्र छी मुदा अपराधी छी। तै सजए अवश्य भेटत। सुनू अहा सब चोरएल आ ठकल गेल वौस्त ओकर मालिक के वापिस क दी। आओर मेहनत क धन अर्जित करी।

<u>दरबार उसरि गेल</u>

<u>गाछ बचाउ</u>

<u>पात्र परिचय</u>

पंकज आ सत्यम	:–	दुनू दोस आ छात्र।
दषरथ	:–	अधवएसू किसान
मुखिया	:–	गामक बुजुर्ग कहबैका महिला आ नव निर्वाचिन मुखियाइन
कासिम भाई	:–	वार्ड सदस्य, मौलवी
मरर	:–	गामक बुजुर्ग, कोनो बातक अकाट्य प्रमाण देनिहार
बादल राजा	:–	मनुक्खक वेष में

दृश्य – पहिल

गामक दृष्य :– किियो घरक ओसारा पर, कियो गाछक तर बेना डोलबैत, कियो पसेना सँ भीजन घाम पोछैत।

पंकजक गमछा सँ पसेना पोछैत प्रवेष :–

हे भगवान कत सँ एतेक गरमी आवि गेल नै जानि, पसेना त सुखै के नामे नै लैए।

सत्यम :– हँ यौ ठीके कहै छी। की कहू राति भरि बेना डोलबैत – डोलबैत डेन दुखा गेल,तैयो चैन सँ कहाँ सुइत पौलहुँ।

पंकज :– (हाथ उठा आँगूर सँ इषारा करैत) देखियौ त कतौ एको टा पातो हिलै छै। नै जानि जरलाहा के कोन कालक पहरा आवि गेलैए ऐ गाम में।

सत्यम :– यौ अही गाम मे नै सौंसे परोपट्टा में इएह हाल छै।

पंकज :– परोपट्टा जाऊ भाँड़ में, अपन गामक सोचू ने जे कोना बाँचव अपने सब। भगवान लगैया ऐ गौंआ सँ खिसिया गेल छथि।

दषरथ हाथ में डोल, पेना लेने माथ में गमछा बन्हने प्रवेष :–

दषरथ :– की खुसुर–फुसुर करै जाइछें तों सब रौ ?

पंकज,सत्यम :– दुनू समवेत स्वरे–''इएह गामक गरमी भेल बेषरमी सब के केलक बेहाल।''

दषरथ :– हँ रौ बौआ सब, गामे किए कहै छी ही पंचकोसी भरि मे इएह तबाही मचल छै रौ।

पंकज :– नै यौ कक्का, पिछला सोम के हम मामा गाम गेल रही, ओतुका बाध त हरियर कचोर छै।

दषरथ :– तोहर मामा गाम छौ कासिकन्हा में ओ त कोषी मैय्या के कृपा छै। दहबै छथिन त उपजा सँ कोठीयो उएह भरै छथिन। रौ पंकजबा, तोहर मामागाम त बीस कोस छौ हम त पंचकोसी मे भेल रौदीक बात कहलियो।

पंकज :– आँय यौ कक्का पंचकोसी से काषी दूर छै कि।

दषरथ :– गमछा सँ घाम पोछैत, निराष भ – देखियौ आइ–काल्हिक षिक्षा,पढ़तै सब अंगरेजीये स्कूल मे पंचकोसी आ कोषी मे भेद कोना बुझतै ?

पंकज सत्यम के हाथ सँ इषारा करैत – रौ दुनू सुन – पंचकोसी माने पाँच कोसक भीतर। कोषी त धार छै जे एत सँ बीस कोस हेतै। आब दुनू जोड़ि के कह जे पाँच बषी की बीस?

दुनू (पंकज,सत्यम) आंगूर पर जोड़ैत कक्का, पाँच कम बीस बेसी।

दषरथ :– हँ आव भेलौ ने। रौ हम एतेक उमेर मे पहिल बेर देखलौं हे एहेन रौदी।

पंकज :– कक्का कते उमेर भेल हएत अहाँ के ?

दषरथ :– (किछु सोचैत) इएह पचास, साठि।

दुनू बच्चा हँसि दैछ, आ समवेते – कक्का पचास की साठि ?

दषरथ :– तों सब त चौल करै छैं पचपन लगा ले।

सत्यम :– कक्का हाथ सँ की कगत पर। जाड़ि के लगा त तखन लेबै जखन अहाँ अपन जन्म तिथि बतएब।

दषरथ :– रौ हमर उमेरक फेर मे नै परै जो, तों सब। पढि लिखि ई सोच जे हमरा सब जेकाँ बुढ़ारी धरि स्वस्थ जीवन कोना बीतेमा इएहने जे गाम छोड़ि शहर ध लेमा।

पंकज :– कक्का ई समस्या गामे के नै छै। उष्मीय ताप (ग्लोवल वर्मिंग) सौंसे विष्व के तपा देतै। तहन, नै पंखा काज करत ने ए0 सी0, फ्रीज। बिजलीयो गोल।

सत्यम :– कक्का सौंसे रौदी छै, तहन अहाँ ई डोल ल के कत गेल रही।

पंकज :– खत्ता उपछि माछ पकड़ ।

सब हसैए । अंन्हार पसरि गेल।

दृश्य – दोसर

खेतक फसिल सुखाएल सन। गाछ सब मौलाएल सन माल–जाल सब पियासे टटाइत।

दशरथ के हाथ में डोल नेने प्रवेष – पानि सँ भरल डोल गएक आगू रखैए परड़ू डिरिया उठैए ऐँ ....हे भगवान ! की करू कतेक काल पाँति मे ठाढ़ भेलौ त एक डोल पानि भरि पौलहूँ। कल त आव घर–घर छै,मुदा जमीन मे पानि त तरी ध लेलकै। कहाँ आवै छै सब कल में पानि। कम पाई बला लोक सब कम लेयर पर कल धसा रखने ऐछ। जेकर कलक पाइप तेसर लेयर पर छैक ओही टा मे पानि अबै छै। त लोक के पाँति लगा पानि भर पड़ै छै। भोर सँ पाँति मे ठाढ़ भ कहुना एक डोल पानि भरलौ सबटा त गए पी गेल परड़ू के की करू ? जाईछी फेर पाँति लगय लेल।

पंकज :– कक्का, फेर चललौं डोल ल खत्ता उपछे कि। हमहू चलू माछ बीछ देव, आ आधा–आधा क लब ?

दषरथ :– हँ रौ ऐहना मखौल सुझै छौ। की करबही ई तोहर कमी नै जमाना के कमी छै। हँसि ले बौआ हँसि ले। जहन तोरा पर पड़तौ तहन बुझबही।

सत्यम :– कक्का की पड़तै यौ.........(सत्यम के उपर साग,तरकारी धोअ़ल पानि फेक दैए कियो)

दषरथ :– हँसैत ....हॉए......हॉए देख उपर बला के हँसिउ देब त ओ छाड़थुन नै। अहिना पड़त।

दषरथ (फेर किछु अटकि) के फेकलक एतेक पानि ओकरा ज्ञान नै। ई पानि हमरा डोल मे द दैत हमर परडू के जी जुरैतै कण्ठ सँ तरास मटैतै आ ओकर जीवन बचितै।

सत्यम :– कक्का अहीं बुझियौ, हमरा सबके कहै छी जे ज्ञाने नै छौ, भगवान के मखौल करै छै। देखू त, सब मनुक्ख एहने भ गेल, पानि के महत्व नै बुझैए, आ दोख सब भगवान के दैए।

पंकज :– कक्का भतीजा दुनु ऐ बेर माछ मारवाक जोगार मे छी की। हम नै छोड़ब अधिया लेबे करब।

दषरथ :– रौ पंकजबा आब पेना सँ तोरे डेंगेबौ चिरकुट (निधेस) कहीं के। एत सब पानि बिनु सुखाइए। बसात आ बुन्नी बिनु तरसैए हिनका सब के धानि सन।

सत्यम :– कक्का कहै छलखिन मइया – सब काम दाई के नाम भौजाई के। पानिक महत्व अहाँ इनगर सियनगर लोक त बझै नै छी। तामस उतारै छी नबका छबारी पर।

पंकज,सत्यम :– कक्का, बौआ, बुच्ची, दाई माई, ननदि, भौजाई, कक्का बाबा सब मिलि बुझू पानिक महत्व तहन बाचत सबहक प्राण।

अन्हार पसरैए

दृश्य – तेसर

सर्बजना दलान – दलान पर सब उमेर आ सब जाति, धर्मक लोकक बैसार। :–

सब चुपचाप बैसल एक दोसरक मूँह तकैए।

मुखियाइन :– सगरो गौंआ सब एके ईष्वरीय डांग सँ डेंगएल छी, की करब आ ककरा कहबै। भाई जान अहाँ त बुजुर्ग छी, अहाँ मुँह खोलू ने की कएल जाय आब ?

कासिम भाई :– मुखियाइन ई त अल्ला मियाँ के काज हई, ऐ मे हम अहाँ मनुक्ख की करब। उपर बला जावत नै चाहता ताबत किछु नै होत।

पंकज :– कुकर्म करू नीचा वला, सबटा दोष उपर बला के। हौ उपर बला कहै छथुन जे वन झाँखुर काटि घर बना ले। बिना काजो पानि बहा ले।

कासिम भाई :– बौआ लोक बढ़ै छै। जमीन त ओतवे धएल हई। त कहू लोक कत जा बसतै ?

पंकज :– से लोक सोचतै, भगवान नई। भगवान जे बनबै छथिन से सबहक हित सेइच । मुदा, हम अहाँ लोक सब जे बनबै छी से मात्र अपना सुबिधा लेल। त ई दैबक डांग सहैए पड़त। जतेक सुबिधा भोगब ततबे कष्टो भोगे लेल तैयार होम पड़त।

मरर (टोलक मुखपुरूष) (गोलगला गंजी आ गमछा बन्हने हाथ में लाठी)

मरर :– हे सबमिलि एहेन विचार करू जै सँ माल–जाल, गाछ पात आ लोकक भला हो। ऐ बौआ बुतरूक पाछाँ सतय जियान क किछु नै होम बला । बुझलौं ।

मुखियाईन :– मरर ई त बड़ दिन देखलखिन झुरखूट बुढ़ में इएह टा छथि आब गाम में। इएह किछु बुधि सलाह देथुन जै सँ सबहक पराण बचै।

मरर :– यै.......... मुखियाइन। हमरो किछु कहाँ फुरैए..........तखन !

मुखियाईन :– की तखन ?

मरर :– एक बेर एहिना रौदी भेल रहै तऽ लोक कहलक जे ई कोनो दाई–माईक करतब छै।

दषरथ :– तरैंग के ईह, अपन–अपन गलतीये नै आ दाई–माईक बदनामी। औ हौ आब की दाई–माई के करतब धएल छै। किछु टोना–टापर आ कि किछु आर बूझलऐह तऽ से कहियौ जे सँ लोक माल,गाछ सबहक जान बचै।

मरर :– दषरथ अहाँ तऽ बजै सँ पहिने मुँह बन्न कऽ देलौ। हम कहैत रही जे सेहो तऽ मौगी मेहर सब जटा–जटिनक नाच खेलेती तऽ किछु भला भऽ सकैए।

पंकज :– (सत्यम सँ) दोस देखियौ दुनियाँ एते आगाँ भऽ गेलै, आ अपन गामक लोकक बुधि एखन धरि ओतै धएल छै। दुनू भभा के हँसैए........।

सत्यम :– हँ यौ हमरो इएह लगै छल जे भगवानक काज में लोकक दोष ! दुनू फेर हँसऽ लगैए।

मुखियाईन :– रौ बुतरू सब, कहबी छै–आगूक जनमल गोर लागऽ दिए। आई जनैम के ठाढ़ भेले हें, लागि गेलें टी0 वी0, कम्प्युटर आ मोबाईलक पाछाँ तऽ तों सब की बुझ गेलें गामक जिनगी, टोना–टापर ?

पंकज,सत्यम :– दुनू दोस हँसैए.................आ एक दोसरा दिस तकैत–भाइयौ दुनिया आब टी0 वी0, कम्प्युटर आ मोबाईले के संग चलै छै। से हमस ब नै चलब तऽ पुरा गाम तऽ पछुएले ऐछ जे और खाधि में जा खसब।

मुखियाईन :– हे एम्हर सुन (दुनू के इषारा करैत) हमस ब जे जनलौं से सोचलौं। अहाँ सब बड़ पढ़ुआ बाबू छी तऽ अहीं सब एकर निदान ताकू ने जै सँ सबहक कल्याण होई। आ से भऽ जेतै त आई सँ अहीं सब हएव गामक मुखपुरूष।

दुनू दोस (पंकज, सत्यम) किछु साचैत, किछु काल मंच पर एम्हर सँ ओम्हर जाइए। फेर दुनू दोस एक ठाम भऽ किछु कनाफुसी करैए।

पंकज :– मइयॉ, बरखा तऽ बादल सँ होइए। हमरा सबके होइए जे बादल राजा रूइस गेल छथि। किए ने सब जा के हुनका मनाबी। ओ चाहता तऽ बरखा सँ फेर बहार आइब जाएत।

मरर :– ईह नव जोगी के पाछु जट्टा। बादल लग जा के किदन हेतै।

मुखियाईन :– मरर, आई धरि हम सब बातक फैसला बुजुर्गे के गपक अनुसार कलौं। अयबेर किएक नै धियापुता के बात मानि के देखल जाए।

समवेत स्वर :— है, है ठीके चली हम सब बादल राजा के मनावी निहोरा—पाती करी।

सब बिदा भ जाइए।

अन्हार पसरि जाइए............

दृश्य – चारिम

पहाड़, जंगल, उभर–खभर रस्ता पर छोट–पैघ सब तूरक सब जाति–धर्मक लोक डेगाडेगी आगू बढ़ि रहल अछि।

मुखियाईन :– इषारा करैत – मरर, कने काल बैसू। आब हमरा सँ नै चलल पार लगैए। मरर घाम पोछैत बैसै छथि – चल चल तों सब आगां बढ़ैत रहऽ

मरर :– भगवान ऐ बुढ़ारी मे जे ने करावथि। एतेक उमेर बीत गेल कहियो भगवान एना हक्कन नै कनेने छलाह। कोनो बरख बरखा मे देरी होइ छल तऽ जनि जाति सब जट–जटिन खेलै छला जै राति जट–जटीन खेलइ छल ओइ राति सगरो पानी–पानी भऽ जाइ छल।

मुखियाईन :– मरर की करबै आब की हमरा अहाँ बला जमाना धएल छै। नित नव–नव अविष्कार होइ छै। नव चीज चलन मे अबै छै। परिवर्त्तन होइ छै। युवक ओही परिवर्त्तनक अनुसार चल पड़त।

मरर :– अहीं के खतिर चुप छी। नै तऽ सब तरि सब दिन बूढ़ पुरानक गप्प करैए लोक। आइ हम सब अई नन्हकिरबा, बुतरू सबहक पाछाँ–पाछाँ मरै छी।

पंकज :– (सत्यम सँ) दोस मुखियाईन मइया आ मरर बाबा तऽ पाछें रहि गेला। (सब के दुनू हाथे रोकैत) रूकै जाउ ओ दुनू गोटे बुढ़ बढ़ानुस, कतौ कतौ किछु भऽ नै जाइ।

किछु खन सब बैस प्रतिक्षारत रहैए..।

सत्यम :– यौ दोस ....हौए यौ, मइया आ बाबा दुनू गोटे टुघरल अबै छथि।

पंकज :– हम सब बादल राजा लग कखन धरि पहुँचि पाएव.....से नै जानि हमरो टांग दुखए लागल आ पियासे से कण्ठ सुखइए।

सत्यम :– रूदल भाई पानिक कंटर खोलू सब कियो पियासल ऐछ थोड़े–थोड़े पानि पीवि ली।

रूदल भाई :– (सब दिन गामक सेवकक रूप में समाजसेवी वनि रहलाह) आई सातुक पोटरी आ पानिक कंटर (गैलन) लऽ सवहक संग द रहल छथि।

रूदल भाई कंटरक ठेपी खोलैत – आउ बेरा–बेरी अबै जाउ आ चुरूक लगा के थोड़े–थोड़े पानि पीवि तरास मेटवै जाऊ।

मुखियाईन :– हौ पंकज सरदार ! आव कहू जे कतेक आर दूर छथि अहाँक बादल राजा।

पंकज :– मइया हमरो बुझल नै ऐछ। हमहू तऽ अपन जीवन में पहिल बेर एलौंहे। अहीं सबहक संगे हमरो बादल राजा सँ भेंट भए जएता.....हे, हौए.......हौए देखियो.....(अंगुरी सँ इषारा करैत) बादल राजा ओत छथि ओइ उँचका पहाड़ पर।

मुखियाईन :– यौ सब पहिने एतऽ रूकू। सब ठमकि जाइए।

मरर :– की यै मुखियाईन आब की भेल ?

मुखियाईन :— हम सब अपने बेगरते आन्हर भेल एतऽ तक आइव गेलौं मुदा ई कहाँ सोचलौं जे बादल राजा के कहवै की ?

मरर :— हम सब एलौं तऽ बुतरू सबहक गप्पे मुदा आब अहीं निर्णय करब जे बादल राजाक दरबार में जा की कएल जाए।

मुखियाईन :— सब सुनै जाउ आब बेसी माथा पच्चीक समय नै ऐछ। बस सब मिली बादल राजा सँ निहोरा करी जे पालि बरसा हमरा सबके जीवन दान दैथ।

समवेत :— हँ, हँ, ठीक छै। सब इएह करब। इएह कहब।

दृश्य – पाँचम

बादल राजा के घेरने चारू भर सब बैसल अछि। बादल राजा मुँह घुमेने रूसल।

मरर :– (मुखियाईन दिस ताकि इषारा सँ गप्प करबक लेल संकेत) अहाँ तऽ बादल राजा के कहियौन जे हम सब हुनकर दरबार में किए उपस्थित भेलौं अछि।

मुखियाईन :– बादल राजा ....बादल राजा एम्हर तऽ ताकू। हम जंगल पहाड़ नांघि धरती पर सँ अहाँ लग एलौं हे। धरती पर रौदी छै चारू भर सब बरखा बेगर त्राहि–त्राहि करै छै। कोनो फसिल नै हेतै तऽ किसान त्रस्त । धार पोखरि सब सूखि गेलै गए, माल, जीव–जन्तु मानव सब पानि बिनु पस्त भेल छै। एक बेर अहाँ नजरि त फेरियौ बादल राजा।

बादल राजा कान खोलने, आँखि खोलने मुदा मुँह घुमेने दोसर दिस, सब निराष होइए।

मरर :– मुखियाईन– हम सब बड़ आषा लऽ एतेक उपर एलौं अहुँक जिद्द रहए जे बुतरू सबहक बात मानल जाए। आब की करब ?

मुखियाईन :– हौ, दुनू बुतरू (पंकज, सत्यम के अपना लग बजा कान में किछु कहै छथि)

पंकज आ सत्यम (बादल राजा के पएर पकड़ि)

पंकज :— हे बादल राजा अहाँ किए तमसाएल छी एक बेर नजरि दियो हम धरती बासी पानिक बिनु त्रस्त छी। सौंसे हाहाकार मचल अछि।

सत्यम :— हे बादल राजा एक बेर बरसू।

बादल :— (तमसाइत) सुनु अहाँ सब ! अहाँ सब अत्याचारी छी। अपना सुख मौज में सबके बिसरि गेलौं। जहन अपन पर विपत्ति एल तऽ हम मोन पड़लौं।

पंकज :— हे सरकार ! की गलती भेल हमरा सबसँ। आ तकर निदान की ऐछ से बताऊ।

बादल :— सुनू – अहाँ सब अपन सुख भोग वास्ते सबटा गाछ कटने जा रहल छी। जाहि सँ वायु प्रदुषण बढ़ए। वन कटला सँ धरती माता उघाड़ होइत छथि। जंगली जानवर सब बेघर भऽ मारल जाइए। तऽ जाउ अहाँ सब धरती पर सुख भोग करू गे।

सत्यम :— बादल राजा आब कोन उपाय हएत से ने कहू।

बादल :— अहाँ सब दलालक हाथे पाइक खातिर सबटा गाछ कटा दै छी से रोकू। वन बाँचत तऽ मेघ लागत, पाइन हएत, सब सुखी रहब।

पंकज :— बादल राजा हम सब सप्पत खाई छी जे आइ सँ गाछ नै काटब। नव गाछ रोपव आ ओकरा बचा के राखब। की यौ लोक सब।

सब समवेते :— हँ, हँ । आई हमरा सबहक आँखि खूजल । हम सब बादल राजा के दोस दै छलौं जे ओ हमरा सबके जरबै छथि मुदा दोषी त हमही सब छी।

बादल :— अहाँ सब एक चीज मोन राखू भगवान जे किछु बनबै छथि से सबहक हित के लेल। आ अहाँ सब सदिखन जे बनबै छी से मात्र अपन सुख भोगक वास्ते। जँ ओइ में कमी भेल तऽ जीवन कष्टकर देवे करता ठीक छै अहाँ सब आई सप्पतक संग धरती पर घुड़र जाऊ। जाउ जाके गाछ बचाऊ।

सब कियो उठि विदा होईए — धन्यवाद बादल राजा।

बैजु बाबरा

पात्र परिचय

अकबर	:–	सम्राट
तानसेन	:–	राज गायक
मंत्री	:–	मित्रसेन सब तरहक सलाह एवं निर्णयकार
दरबान	:–	चौकीदार
हरिदास	:–	तानसेन आ बैजुक संगीत गुरू
बैजू	:–	संगीतक महान हस्ती एवं तानसेनक घमंड तोड़निहार

बैजू बावरा

दृश्य–पहिल

सम्राट अकबर के दरबार। दरबार में राज गायक तानसेन।

अकबरः– तानसेन जी अहाँक गायत त जग प्रसिद्ध अछि मुदा हमरा चिन्ता अछि तानसेने किएक दोसर किए नै?

तानसेनः– महाराज! संगीत साधनाक चीज थिक। धैर्य रियाज आ एकाग्रता मँगैए जे सबहक वश के चीज नै ऐह। ते तानसेन कहै छथि एको हम द्वितीयो नास्ति।

अकबरः– राज दरबार में राज एक मुदा मंत्री अनेक होदत छथि। तहिना रागदरबारी सेहो एक से अधिक भ सकैत छथि। मंत्री जी किएक ने आओर तानसेन ताकल जए।

मंत्रीः— जी महाराज जे आज्ञा।

तानसेनः— महाराजए हम नगरक दूर—दूर धरि तकलौ। कतौ हमरा सँ बढ़ि के बायक नै भेटल जे महाराज दरबार मे गाबि संगीतमय क सकय।

अकबरः— तानसेन इ अहाँक स्वाभिमान छी कि अहंकार।

तानसेनः— महाराज। अहाँक सोझा अहंकार कोना प्रस्तुत क सकैछी। तैँ स्वाभिमाने मानल जए।

अकबरः— मंत्री नगरक बाहर भीतर सगरो ई एलान करबा दियौ — जे कियो हमरा सोझाँ तानसेन के गायन सँ पराजित क देत ओकरा हम मुँह माँगल ईनाम देवै। मुदा जे स्वयं पराजित भ जाएत ओकरा ''सजा ए मौत ''।

दृष्य — दोसर

राजषाही दुनियादारी सँ बेखबर साधुक एकटा मंडली बाट में जाइत किलाक आगा गाछक चबुतरा लग छाहरि आ लोकक जुटान देखि बैसि गेल। किछु क्षण छहरिया साधु सब संगत शुरू केलक ।

हरे रामा रामा हरे कृष्णा कृष्णा आ सुरदासक पद आदिक सुमधुर कीर्तनक गायन।

दरबान— किछु खन चुप्प मधुर कीर्तन सुनैत। साधु बाबा अहाँ सबहक समधुर स्वर बादषाहक कान के प्रिय लगलनि। ऐछ — जे अहाँ सब दरबार मे उपस्थित भ गायन वादन करी। जँ अहाँ सब मियाँ तानसेन सँ बढि क गैलहुँ त बुझू मालामाल भ जाएब । नै त ''सजा ए मौत''।

बैजनाथ :— ऐं ''सजा ए मौत।''सब साधु के पसेना छुटि गेलै। भाई (हाथ जोड़ैत) हम सब कि जानय गेलौं संगीत की होइछ। हम सब त भगवानक सुमिरन भजन करै छी। हम सब भला मियाँ तानसेनक मोकाबिला कोना क सकै छी। लियय हम सब कीर्त्तन बन्न क दैत छी।

दरबान :— (रोआब देखबैत) नै, अहाँ सबके बादषाह लग चलैए पड़त। ई बादषाहक आदेष छनि।

दृष्य – तेसर

दरबार लागल अछि। साधु सब गायन वादन शुरू कएल।
हरे रामा हरे कृष्णा कृष्णा कृष्णा हरे हरे।

दरबारी :– साधु सबहक गायन में कीर्त्तन रस छि संगीत ज्ञान नै। सुनि सब दरबारी ठहाका लगेलक हा हा हा।

संगीत सम्राट तानसेन गर्व सँ मुस्कराइत उठलाह।
तानसेन – शहंषाह । ई सब साधु अछि,ई संगीत की जानय गेलै। एकर सबहक जान बख्शल जाए। नै त हमरा कलंक लागत । हाँ हिनका सब के मुगल सम्राज्यक सीमा सँ बाहर क देल जाए।

साधु बैजनाथ :– (तमतमाईत) तानसेन! आइ हम विवष छी। मुदा अहाँक अनुचित आज्ञा सँ हमर खुन खौलि उठल अछि। कला केकरो बपौती नही होइ छै। ओ साधना चाहैए। हम कलाक साध्ना करब। आ हम आई ई प्रतिज्ञा करै छी, जे एक नै एक दिन तानसेनक मोकाबिला अवष्य करब।

दृष्य – चारिम

बैजु संगीतक संकल्पक संग गुरूक तलाष में भटकि रहल अछि। अंततः वृंदावन मे गुरू हरिदास के शरण मे आवि रमि गेल।

गुरू :– अहाँ एतेक दूर धरि हमरा शरण मे एलहुँ स्वागत ऐछ अहाँक। अहाँक संगीतक जिज्ञासा हमरा उत्साहित कऽ रहल अछि।वर्षो पहिने हमर एहेन एकटा षिष्य एते सँ दीक्षा ल के गेला। जिनका संगीत सम्राटक उपाधी भेटलनि।

बैजु :– हुनक नाम की छनि गुरूवर।

गुरू :– संगीत सम्राट तानसेन।

बैजु :– तानसेन। आँखिक चमक बढ़ि गेलैक। की हम तानसेन तानसेन जकाँ विज्ञ भऽ सकै छी गुरूवर ।

गुरू :— अहाँक जिज्ञासा, अहाँक आँखिक चमक कहैए जे ओ सेर छथि तऽ अहाँ सवा सेर भऽ सकै छी।

बैजु :— धन्य हे गुरूवर। कहि अपन साधना मे लीन भ गेल बैजु।

(किछु मास पछाति)

गुरू :— वाह! अहाँक एतेक दिनक साधना मे एना विभोर भेल देखि हमर हृदय पसरि चाकर भ गेल अछि। कला साधना मँगै छै। ई शब्द बुझै छै वा दोहरवै छै मुदा अहाँक संगीतक प्रति समर्पण तऽ 'वावरा' बना देलक अछि। आई सँ अहाँ मात्र बैजु नै बैजु वावरा के नामे पुकारल जाएव।

बैजु :— गुरूवर अहाँक बताओल सबटा तकनीकी आ कला मंत्र हम मोन राखि साधनारत छी। अपने के जतऽ त्रुटि बुझाय हमर साधना भंग कऽ सुधरवाक निर्देष दी।

गुरू :— वाह! अहाँक संगीतक लहरि त हमर कुटिया सँ निकलि यमुना के उठल तरंग के सेहो चंचल कऽ दैए। हमरा गर्व अछि ऐ षिष्य पर। लगैए भगवान एहेन—एहेन कला साधक के हमरा लेल विलगा के गढ़िने होइथ।

बैजु :— गुरूवर अहाँ हमर संगीत साधना सँ प्रसन्न छी। तऽ हमरा धनोपार्जन हेतु जेवाक आज्ञा देल जाओ।

गुरू :— एवमस्त बालक ! अहाँ ई कुटिया छोड़ि कतौ जा धनोपार्जन कऽ सकैत छी मोन राखव जे संगीत के अस्तित्व बचा के राखी बस।

बैजु :— जी गुरूवर ! जे आज्ञा होई।

दृष्य — पाँचम

बैजुवावरा एक टा तानपुरा आ कमंडल ल वृंदावन छोड़ि चलि पड़ैए। मथुरा मे एकटा चबुतरा पर बैसि गावि रहल अछि।

गबैत—गबैत एक दिन आगरा किलाक आगाँ पहुँचि गबै लेल बैसि जाइए।

दरबान :— अहाँ के बादषाहक दरबार मे गाबय पड़त । चलू एत से उठिके।

बैजु :— अपन तानपुरा आ कमंडल ल शहंषाहक आगाँ जा बैसल। आज्ञा हो महाराज।

अकबर :— तानसेन के तैयार हेवाक संकेत केलनि — तानसेन अपन साजबाज सम्हारू आ तैयार भ जाउ मोकाबिला लेल।

तानसेन :— जी महाराज।

अकबर :— बैजु सँ — गाउ मुदा ध्यान राखू जे हमर किछु शर्त अछि।

बैजु :— (बैजु दस वर्ष पूर्व भेल घटना मोन पाड़ैत) जनै छी बादषाह। (अकबरक बात बीचे मे टोकैत) मदा पहिने तानसेन मियाँ अपन कला देखाबथि।

अकबर :— (तमतमाइत) मँजूर। शुरू करू (तानसेन के इसारा करैत)

तानसेन :— (नोकर सँ) ऐ बासन मे पाथरक एक टा टुकरी राखि दियो।

सम्पूर्ण वातावरण संगीतमय भ गेल। सब संगीत मे डुबि गेल। आँखि खुजल पर सब देखए जे पाथर मोम जकाँ पिघल लागल। तानसेन ओई पाथरक बीच एक जोड़ी झालि राखि दैए।

तानसेन (गर्व सँ अकबर दिस तकैत) :—

शहंषाह आव ई युवक ऐ झालि के ऐ मे सँ निकालथि।

बैजु :— हम तैयार छी परन्तु शहँषाह, हमरा एक टा अवसर देल जाए।

अकबर :— मंजूर अछि, परन्तु ध्यान रहय...........।

बैजु :— जी ध्यान अछि। पहिने बहुत रास गहना —हार, कंगन, कड़ा, झूमका आदि मँगाओल जाए। (निर्भिक होइत आदेष देलक)

अकबर :— (तामस मुदा काबू राखि)— फर्ष पर सब बेगमक गहना राखल जाए।

(गहनाक ढ़ेर लागि गेल)

बैजु गावय लगैए तानसेन अकबर समस्त दरबारी मुग्ध भ जाइए।

ध्यान टूटला पर हिरणक झूँड सब गहना के गरदनि आ सींग मे लटकौने ठाढ़ छल। सबहक नजरि पड़िते सभटा बोन मे भागि गेल।

बैजु :— (आसन सँ उठि ठाढ़ हाइत) शहँषाह ! जँ मियाँ तानसेन बेगम के गहना मँगा देता त हमहू पाथरक बीच जमल झालि के निकालि दब।

तानसेन :— मूँह लटका साँस रोकि बैसल रहला। मॉफ कएल जाए गलती भेल।

दरबार मे सन्नाटा पसरि गेलय।

बैजु :— (शुन्यता के खत्म करैत) बादषाह — कला ककरो बपौती नै एछ। ओ त साधनाक दासी अछि। खेद ऐछ, मियाँ तानसेन संगीत के अपन बपौती सम्पति बुझि बैसल ओ बुझलनि जे संगीतक इएह अंतिम सीमा अछि। ई संगीतक अपमान छल हम ओही अपमानक कलंक धोलहुँ अछि। आब मियाँ तानसेन अपन घमंड छोड़ि अपना सँ घटिया गाबय बलाक सजा—ए—मौत सँ छट्टी दिया दौथ।

तानसेन :— लाजे झकैत बैजुक पएर पर खसि पड़ल। हमरा सँ गलती भेल आई हमर घमंड टुटि गेल। हम लज्जित छी।

बैजु :— पएर सँ उठबैत गला मिलैत — हम अहाँ गुरू भाई छी। अहाँ त हमरा सँ पैघ छी। अहाँक घमंड टुटि गेल इएह हमर सफलता अछि।

अन्हार पसरि जाइए।